PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Hindustan, Delhi
Wed, 16 Aug 2017, Page 8
Width: 17.27 cms, Height: 48.01 cms, a3, Ref: 9.2017-08-16.98

वादे और संकल्प

हर साल 15 अगस्त को लाल किले से दिए जाने वाले प्रधानमंत्री के भाषण को हम चाहे तो रस्म-अदायगी भी कह सकते हैं, लेकिन सच यह भी है कि पूरे देश में इसे बहुत ध्यान से सुना और गुना जाता है। इसमें हमें सरकार की प्राथमिकताओं की झलक तो मिलती ही है, साथ ही यह अंदाज भी लगता है कि वह चीजों को किस तरफ ले जाना चाहती है। वैसे तो मीडिया के इस युग में ऐसे मौके तकरीबन हर कुछ दिन में आते रहते हैं, जब प्रधानमंत्री की बात आम लोगों तक पहुंचती ही है। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तो हर महीने रेडियो पर 'मन की बात' कार्यक्रम के जरिये जनता से मुखातिब होते ही हैं। मगर इन सबसे भी लाल किले से दिए जाने वाले भाषण की अहमियत कम नहीं होती, क्योंकि यह जनता से प्रधानमंत्री का अकेला ऐसा संवाद होता है, जिसमें जनता की समस्याओं और सरकार की नीतियों को संपूर्णता से देखा जाता है। बेशक, इसमें सरकार की उपलब्धियों का बखान भी होता है, जो इस भाषण को कभी-कभी बोझिल भी बना देता है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण के लिए यह बात नहीं कही जा सकती। वे अपनी बात इतनी ऊर्जा, इतने आत्मविश्वास और इतनी सरलता से रखते हैं कि उसमें नीरसता के प्रवेश की कोई गुंजाइश नहीं बचती। नीरस तो पिछले साल लाल किले से दिया गया उनका भाषण भी नहीं था, जो पूरे 90 मिनट चला था और जिसे लाल किले से दिया गया इतिहास का सबसे लंबा भाषण कहा जाता है। इसके मुकाबले इस बार का भाषण बहुत छोटा था। मगर 57 मिनट के इस भाषण में ऐसा बहुत कुछ था, जिस पर गौर किए जाने की आवश्यकता है।

लाल किले के प्राचीर से दिया गया भाषण इस बार बहुत छोटा था। पर 57 मिनट के इस भाषण में ऐसा बहुत कुछ था, जिस पर गौर किए जाने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह लाल किले से दिया जाने वाला लगातार चौथा भाषण था। और अगर इन चारों भाषणों को एक साथ रखा जाए, तो इन सभी में भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान की बात पर बहुत जोर दिया गया है। वैसे जिन चुनावी मुद्दों को उठाकर उन्होंने सत्ता हासिल की थी, उनमें भी भ्रष्टाचार सबसे प्रमुख मुद्दा था। यह बताता है कि सरकार का फोकस अब भी इस मुद्दे पर बरकरार है। यह इसलिए भी स्वागत योग्य है कि भ्रष्टाचार को पहले भी कई बार चुनावी मुद्दा तो बनाया गया, पर बाद में उसे भुला दिया गया। इस मामले में नोटबंदी और बेनामी संपत्ति कानून से लेकर जीएसटी तक सरकार के पास गिनाने के लिए कई कदम भी हैं। इन कदमों के असर को लेकर मतभेद हो सकते हैं या यह कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार अब भी जारी है। इस बारे में प्रधानमंत्री के भाषण की बहुत सारी चीजें कुछ लोगों को अतिशयोक्ति भी लग सकती हैं, लेकिन यह भी सच है कि भ्रष्टाचार को लेकर सरकार की कोशिशें लगातार जारी हैं।

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर दिए गए इस भाषण का दूसरा महत्वपूर्ण मुद्दा कश्मीर है। प्रधानमंत्री ने कहा है कि कश्मीर की समस्या न गाली से सुलझेगी, न गोली से सुलझेगी, समस्या हर कश्मीरी को गले लगाने से सुलझेगी। हालांकि हमें नहीं पता कि आने वाले समय में प्रधानमंत्री के इस बयान की भावना पर देश का प्रशासनिक अमला किस हद तक अमल करेगा, लेकिन यह बयान दिशा बदलने की ओर इशारा तो करता ही है। पिछले डेढ़-दो दशक में कश्मीर में गाली और गोली की भाषा ही ज्यादा सुनी गई है, गले लगाने वाली भाषा का कश्मीर को सचमुच इंतजार है। उम्मीद है कि इस पर अमल की जानकारी के लिए हमें लाल किले से प्रधानमंत्री के अगले भाषण का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। वैसे अगला भाषण उनके इस कार्यकाल का आखिरी भाषण होगा, और तब तक उन सभी मुद्दों पर सरकार की उपलब्धियां ठोस रूप में हमारे सामने होंगी, जिन्हें इस बार उन्होंने पूरे विस्तार से गिनाया है।